॥ श्री गणेशाय नमः ॥

श्री हनुमान जी की आरती

परंपरागत; कई संस्करणों की ‘तुलसीदास प्रभु कीरति गाई’ पंक्ति के कारण गोस्वामी तुलसीदास जी से जोड़ी जाती है

आरती कीजै हनुमान लला की।
दुष्ट दलन रघुनाथ कला की॥

जाके बल से गिरिवर काँपे।
रोग दोष जाके निकट न झाँके॥
॥ आरती कीजै हनुमान लला… ॥

अंजनि पुत्र महा बलदाई।
संतन के प्रभु सदा सहाई॥
॥ आरती कीजै हनुमान लला… ॥

दे बीरा रघुनाथ पठाए।
लंका जारि सिया सुधि लाए॥
॥ आरती कीजै हनुमान लला… ॥

लंका सो कोट समुद्र सी खाई।
जात पवनसुत बार न लाई॥
॥ आरती कीजै हनुमान लला… ॥

लंका जारि असुर संहारे।
सियारामजी के काज सँवारे॥
॥ आरती कीजै हनुमान लला… ॥

लक्ष्मण मूर्छित पड़े सकारे।
आनि सजीवन प्रान उबारे॥
॥ आरती कीजै हनुमान लला… ॥

पैठि पाताल तोरि जम-कारे।
अहिरावण की भुजा उखारे॥
॥ आरती कीजै हनुमान लला… ॥

बाएँ भुजा असुर दल मारे।
दाहिने भुजा संतजन तारे॥
॥ आरती कीजै हनुमान लला… ॥

सुर नर मुनि आरती उतारें।
जय जय जय हनुमान उचारें॥
॥ आरती कीजै हनुमान लला… ॥

कंचन थार कपूर लौ छाई।
आरती करत अंजना माई॥
॥ आरती कीजै हनुमान लला… ॥

लंक विध्वंस किए रघुराई।
तुलसीदास प्रभु कीरति गाई॥
॥ आरती कीजै हनुमान लला… ॥

जो हनुमानजी की आरती गावे।
बसि बैकुंठ परम पद पावे॥
॥ आरती कीजै हनुमान लला… ॥

॥ बोलो श्री हनुमान की जय ॥